2

पुरुषों की आवश्यकता है

वचन पाठः यहेजकेल 22:30

पिछले पाठ में हमने घर में आमतौर पर आने वाली कुछ चुनौतियों का संक्षिप्त परिचय दिया था। इस पाठ में हम विशेष रूप से पतियों और पिताओं की ज़िम्मेदारियों की चर्चा करेंगे और बाद में पतियों तथा माताओं की बात करेंगे।

बहुत पहले, परमेश्वर ने कहा था, ''मैंने उन में से ऐसा कोई मनुष्य ढूंढ़ना चाहा, जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसे खड़ा हो कि मुझे उसका नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला'' (यहेजकेल 22:30)। इस्राएलियों ने बहुत बड़ा पाप किया था और विनाश निश्चित था। परमेश्वर ने कहा कि उसने दीवारों को खड़ा करने के लिए, अर्थात दूरी मिलाने वाला आदमी ढूंढ़ा पर ऐसा आदमी मिला नहीं ।[1]

किसी भी समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता सही लोगों अर्थात भक्तिपूर्ण, समर्पित, साहसी लोगों की होती है, जो आगे बढ़कर अगुआई कर सकें, पर आमतौर पर ऐसे लोग मिलते नहीं। ''मैंने एक मनुष्य को ढूंढ़ा; ... परन्तु कोई न मिला।''

कालांतर में, मैंने ऐसी मण्डलियों में काम किया है, जहां मुझे लगता था कि हम हर व्यक्ति और हर वस्तु पर ज़ोर देते थे, सिवाय पुरुषों के। स्त्रियों के लिए हमारे विशेष कार्यक्रम थे; वे लोगों से मिलने के लिए जाती थीं; बीमारों की देखभाल करती थीं; अच्छी पत्नियां और माताएं बनने पर विशेष रूप से सिखाती थीं। बच्चों का हम बहुत ध्यान रखते थे और यह कहकर कि ''वे कल के अगुवे हैं'' उनके लिए विशेष कार्यक्रम बनाते थे। यह सब सही और अच्छा है, परन्तु जो आज के अगुवे अर्थात पुरुष हैं, उनका क्या होगा? जब तक मण्डली के पुरुषों में जोश नहीं आता और वे प्रभु के लिए कुछ नहीं करते, तब तक उस मण्डली द्वारा किया जाने वाला कोई भी कार्यक्रम बेमाने होगा।

समाज में, कलीसिया में, और अपने घरों में हमें कैसे पुरुषों की आवश्यकता है?

आवश्यकता हैः पुरुषों की, जो मसीही अर्थात सच्चे मसीही हों

पहले तो हमें ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है जो मसीही हों, यानी जो सचमुच में मसीही हों। किसी ने मज़ाक में कहा है कि स्वर्ग में न विवाह और न विवाह के लिए देना होगा (मत्ती 22:30) क्योंकि वहां अधिक पुरुष नहीं जाएंगे। बेशक, ऐसा नहीं है, परन्तु मुझे मालूम है कि उसके कहने का क्या अर्थ था। मैं ऐसे कई पुरुषों को जानता हूं, जिनको लगता था कि एक प्रसिद्ध पुराने गीत के बोल "Take my *wife*, and *let her* be consecrated, Lord, to Thee" अर्थात ''हे प्रभु मेरी *पत्नी* को ले और *उसे* अपने लिए

पवित्र कर'' है[1] एक प्रचारक जिसे मैं जानता हूं, का सुझाव था कि कलीसिया में बहुत से "brothers-in-law" हैं। वह व्यंग्यपूर्ण ढंग से उन पतियों की बात कर रहा था, जिनकी पत्नियां तो मसीही थीं, परन्तु वे नहीं।

यदि आप पुरुष हैं, परन्तु मसीही नहीं हैं तो मैं दिल से कहता हूं कि आप मसीही बन जाएं। सबसे पहले तो मैं आपको ऐसा इसलिए कह रहा हूं, ताकि आपका अपना प्राण बच जाए। किसी दूसरे की धार्मिकता के आधार पर आप का उद्धार नहीं हो सकता। पौलुस ने ज़ोर देकर कहा था कि ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा'' (रोमियों 14:12)।

एक आदमी की, जो मसीही नहीं था, काल्पनिक कहानी है कि उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में वह मर गया और स्वर्ग के फाटक पर चला गया। जब उसने अन्दर जाने की कोशिश की तो द्वारपाल ने पूछा, ''तुम कौन हो?'' उस आदमी ने कहा, ''मुझे यकीन है कि तुम मेरी पत्नी को जानते हो।'' पत्नी का नाम बताकर वह द्वारपाल को बताने लगा कि किस प्रकार वह आराधना में जाती, बाइबल पढ़ती, प्रार्थना करती, काम करती और दूसरों की सहायता करती थी। उसने बताया कि वह बहुत ही अच्छी मसीही स्त्री थी। ''पर तुम्हारी पत्नी के बहुत अच्छी मसीही होने के कारण तुम स्वर्ग में नहीं आ सकते,'' द्वारपाल का उत्तर था। आदमी ने विरोध किया, ''पर मेरी पत्नी ने मेरे लिए मसीही जीवन जीया और मेरे लिए वह आराधना में जाती थी।'' ''बहुत अच्छा,'' द्वारपाल ने कहा, ''और अब वह तुम्हारे लिए स्वर्ग में चली गई है।'' अपने प्राण के उद्धार के लिए आपको ही मसीही बनना है।

यदि आप पिता हैं, तो आपको अपने परिवार के लोगों के प्राणों के उद्धार के लिए मसीही बनना चाहिए। आपको अहसास हो या न परन्तु पिता होने के कारण अच्छा हो या बुरा आप का अपने परिवार पर बहुत प्रभाव है। हो सकता है कि आप अपनी पत्नी का विरोध न करते हों या जब वह सही काम करने के लिए कुछ करती हो तो आप जान-बूझकर रुकावट डालते हों; परन्तु थोड़ी सी लापरवाही से आप उसे सकारात्मक प्रभाव को जो पड़ सकता था, खराब कर सकते हैं। 2 तीमुथियुस 2:2 जैसी आयतों में, पुरुष के प्रभाव पर पूरी बाइबल में ज़ोर दिया गया है, जहां पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, ''और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी *मनुष्यों* को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।''

मुझे आपका और आप के परिवार का ध्यान है, जिस कारण मैं जितना हो सके आप से साफ-साफ कहना चाहता हूं कि बिना मसीह के, आप वह आदमी कभी नहीं बन सकते जो आपको बनना चाहिए। आप वह पति नहीं बन सकते जो आपको बनना चाहिए। आप कभी वैसे पिता नहीं बन सकते, जैसे आपको बनना चाहिए। आपका प्रभाव कभी अच्छा नहीं हो सकता।

प्लैटो[3] से एक बार पूछा गया कि ''मनुष्य क्या है?'' उसका उत्तर था, ''बिना पंखों के दो पैरों वाला जानवर।''[4] क्या आप जानवरों से केवल इसलिए अलग हो सकते हैं कि उनके चार पांव हैं और आपके दो, क्या आप पक्षियों से केवल इसलिए अलग हैं कि उनके पंख हैं पर आपके नहीं? बेशक नहीं, बल्कि आप जानवरों से इसलिए श्रेष्ठ हैं क्योंकि परमेश्वर ने

आपको अविनाशी आत्मा दी है (सभोपदेशक 12:7)। क्या आप इस प्रकार *जी रहे* हैं कि आप को अहसास है कि एक दिन आपको परमेश्वर के सामने जाना है। (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)? जब तक आप मसीही व्यक्ति नहीं हैं, तब तक आप वह आदमी नहीं बन सकते, जो आपको बनना चाहिए।

आवश्यकता है: पुरुषों की, जो पिता हों, सचमुच पिता

दूसरा, हमें ऐसे पुरषों की आवश्यकता है जो पिता हों, सचमुच में पिता। कोई विरोध कर सकता है, ''पर मैं एक पिता हूं।'' मैं इस शब्द का इस्तेमाल बाइबल के अर्थों को ध्यान में रखकर कर रहा हूं। जिस प्रकार घर में किताब रखने से कोई लेखक नहीं बन जाता, वैसे ही घर में आपकी संतान होने का अर्थ यह नहीं कि आप सचमुच में पिता हैं।

उन पर जो पिता हैं, बाइबल बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डालती है: ''एक ही देह है और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है'' (इफिसियों 6:4)। कई लोग यह मानते हैं कि बच्चे को सही शिक्षा देने की ज़िम्मेदारी मां की है, परन्तु यह सच नहीं है। यह काम पिता का है। सबसे पहले और सबसे बढ़कर बच्चे के पालन-पोषण के लिए पिता को ही जवाबदेह ठहराया जाएगा।

परमेश्वर ने अब्राहम के लिए कहा, ''क्योंकि मैं जानता हूं कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएंगे, आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें; ताकि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है, उसे पूरा करें'' (उत्पत्ति 18:19क)। परमेश्वर को अब्राहम पर भरोसा था कि वह अपने घर की आत्मिक अगुआई अच्छी तरह से कर सकता है। क्या परमेश्वर आप पर वही भरोसा जता सकता है!

इस्राएलियों को अपने विदाई संदेश में यहोशू ने कहा था:

> और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किसी की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की, जिनकी तुम्हारे पुरखे महानद के उस पर करते थे, और चाहे एमोरियों के देवाताओं की सेवा करो, जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु *मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करूंगा* (यहोशू 24:15)।

यहोशू अपने पूरे घराने की ओर से बात कर पाया। क्यों? क्योंकि वह पिता अपनी ज़िम्मेदारी निभाने को तैयार था।

ऐसे पिता बनने में समय लगता है। अपनी बेटी के जन्म के समय से ही, मेरा एक मुख्य लक्ष्य अपने बच्चों को विश्वासी मसीही बनाने के लिए जो भी करना पड़े, वह करना था। मैंने कई प्रचारकों को देखा था, जो दूसरों की चिन्ता में इतने व्यस्त रहते थे कि उन्हें अपने परिवार के लिए समय ही नहीं मिला, जिससे उनके अपने बच्चे प्रभु से दूर हो गए। पीछे मुड़कर देखें तो पिता की ज़िम्मेदारी आसान नहीं है। किसी भी पिता के लिए अपने बच्चों के साथ होने के लिए समय निकालना आवश्यक है। वह समय बहुत आवश्यक है।

मैं मानता हूं कि आप व्यस्त आदमी हैं। आप पर कई बार उन ज़िम्मेदारियों का बोझ बुहत अधिक होता है, परन्तु सफलता और प्राप्ति की वेदी पर अपने बच्चों कीबलि न दें। यहूदा ने प्रभु को चांदी के तीस सिक्कों के लिए बेच दिया था। जब उसे अहसास हुआ कि उसने क्या कर दिया है तो ''तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फैंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी'' (मत्ती 27:5ख)। आज बहुत से पिता अपने बच्चों को बड़े घर, अच्छी कार, और प्रभावशाली पद के लिए बेच रहे हैं। अन्त में यह अहसास होने पर कि उन्होंने क्या कर डाला, उन्हें कैसा लगेगा? यीशु के प्रसिद्ध शब्दों का इस्तेमाल करते हुए उन्हें यहां लागू करें तो, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने बच्चों की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने बच्चों के बदले में क्या देगा?'' (देखें मत्ती 16:26)

आवश्यकता है: पुरुषों की जो अगुवे हों, असली अगुवे

तीसरा, हमें अगुओं की आवश्यकता है, जो सचमुच में अगुवे हों। इससे मेरा तात्पर्य जन नेता ही नहीं, बल्कि हमें ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है जो सार्वजनिक और निजी हर तरह से आत्मिक मामलों में अगुआई दे सकें।

परमेश्वर ने ठहराया है कि पुरुष अगुआई करें। पवित्र आत्मा ने ऐल्डरों या बिशपों की विशेषताएं बताई हैं, जो केवल पुरुषों के लिए हैं (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6)। नया नियम कलीसिया की सार्वजनिक सभा में बोलने की बात करते हुए स्त्रियों को ''चुप रहने'' (1 कुरिन्थियों 14:34) के लिए कहता है न कि ''पुरुष पर आज्ञा'' (1 तीमुथियुस 2:12) चलाने के लिए।

जब हम बाइबल के प्रमुख व्यक्तियों पर ध्यान देते हैं तो हमारा ध्यान आमतौर पर विशिष्ट लोगों की ओर जाता है। नूह साहस और आज्ञाकारिता की मिसाल है। अय्यूब को धीरज की मिसाल माना जाता है। यूसुफ ने शुद्ध जीवन का नमूना दिया। कालेब से बढ़कर आशावादी होना कठिन है। दाऊद हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना सिखाता है। यीशु के जी उठने के बाद पतरस ने ज़बर्दस्त अगुआई दी। कठिन कार्य के लिए पौलुस के नमूने में सुधार कौन कर सकता है?

मुझे गलत न समझें: मैं यह नहीं कर रहा हूं कि बाइबल में किसी महान स्त्री का नाम नहीं है। कई तो शायद इन आदमियों से भी बढ़कर थीं। मेरे कहने का तात्पर्य है कि अगुआई के लिए आमतौर पर परमेश्वर पुरुषों को ही चुनता था। सेवा और उपयोगिता का रास्ता दिखाने के लिए परमेश्वर को पुरुषों की आवश्यकता है यानी परमेश्वर चाहता है कि आदमी देखें कि क्या किया जाना आवश्यक है और उसे कैसे करना चाहिए।

पत्नियों के लिए अपने पतियों के अधीन होने के ये कारण बताते हुए पौलुस ने कहा, ''क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई'' (1 तीमुथियुस 2:13)। उसने यह भी लिखा, ''और पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई है'' (1 कुरिन्थियों 11:9)।

बाइबल सिखाती है कि वचन के अनुसार और स्वाभाविक रूप से अगुआई पुरुषों को ही करनी चाहिए यानी अगुआई न कर पाना उसके लिए वचन के विरुद्ध और अस्वाभाविक तथा

गलत होगा। मुझे नहीं मालूम कि परमेश्वर ने ऐसा प्रबन्ध क्यों किया। मुझे लगता है कि परमेश्वर ने यह निर्देश ''कोई दूसरा ही कर दे'' के मनुष्य के स्वभाव को ध्यान में रख दिया होगा। (मैंने ध्यान दिया है कि सेवा संगठनों में जहां पुरुष व स्त्रियां सब होते हैं, आमतौर पर आदमी अगुआई का काम औरतों को देकर अधिकतरस्वयं ही करते हैं।) परमेश्वर के कहने का जो भी कारण हो, बाइबल साफ बताती है कि कलीसिया में हों या घर में, अगुआई का काम पुरुष ही करें।

कितनी बार पुरुष इसमें नाकाम होते हैं! आराधना में उपस्थिति को ही ले लें: मैंने ऐसे पुरुषों को देखा है, जो अपनी पत्नी और बच्चों को आराधना के लिए कार से छोड़ने आते हैं और खुद एक और परमेश्वर रहित रविवार बिताने के लिए घर चले जाते हैं।

टैक्सस के कोरपस क्रिस्टी समाचार पत्र की सुर्खी है: ''मां चर्च में, पिता नींद में, बच्चे की मौत।'' यह कहानी छोटे बच्चे के मरने की है, जिसे आराधना में गई मां घर में पिता के पास छोड़ गई थी। बच्चे का ध्यान रखने के बजाय पिता सो गया और बच्चा टब में जा गिरा और मर गया। इससे भी भयंकर त्रासदी यह है कि आत्मिक स्तर पर यही कहानी प्रत्येक रविवार सुबह हर घर में दोहराई जाती है। मां तो आराधना में है, पिता सो रहा है और ब्च्चे आत्मिक रूप से मर रहे हैं-क्योंकि मां अकेले उन्हें सिखा नहीं सकती।

घर में सिखाने और प्रशिक्षण की बात पर विचार करें। हमने पहले ही ध्यान दिया है कि बाइबल सीधे-सीधे पिता के कन्धों पर यह ज़िम्मेदारी डालती है (इफिसियों 6:4)। इसके बावजूद, कई बच्चे ऐसे हैं, जिन्होंने कभी अपने पिता के मुंह से अपने लिए प्रार्थना नहीं सुनी।

प्रभु के लिए काम करने के बारे में क्या विचार है? कई मण्डलियों में, यदि महिलाएं लोगों के पास न जाएं, दूसरों की सहायता न करें, खोए हुओं को सिखाने की कोशिश न करें, तो महत्वपूर्ण काम तो बिना किए ही रह जाएं।

मेरे कई पुरुष मित्र हैं। जो ''स्त्रियों की स्वतन्त्रा की लहर'' से परेशान हो गए थे। उन्होंने ''औरतों के हावी हो जाने'' की शिकायत की। इस के साथ ही, जैसा कि सबको मालूम है, उन्होंने खुद कभी किसी बात में अगुआई नहीं की। हां, कई पुरुष हैं, जो चाहते हैं कि वैसा ही हो जैसा वे कहते हैं, परन्तु उन्होंने पुरुष होने के कारण उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी को कभी न माना।

कुछ साल पहले ओक्लाहोमा नगर के समाचार पत्र *ओक्लाहोमा एण्ड टाइम्स*में ''रोम क्यों गिरा'' शीर्षक से सोचने को मजबूर करने वाला एक लेख छपा। उस लेख का कुछ भाग इस प्रकार है:[7]

> फिलाडेल्फिया के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक, डॉ. मौरिस ई. लिंडन ने अमेरिका में ''पुरुषों का नेतृत्व फिर से पुरुषों को मिलने'' की बात कही है।
>
> एक न्यूज़ कॉन्फ्रेंस में उन्होंने बताया कि प्राचीन रोम की तरह अमेरिका भी ''समृद्धि दिलाने वाले सुखवाद'' के वश में है।
>
> उन्होंने कहा कि रोमी समृद्धि से रोमी स्त्रियों की भूमिका में बदलाव आया। वे

> शक्तिशाली और आक्रामक हो गईं जिसका नुकसान पुरुषों को हुआ। ... उन्होंने इसे रोमी साम्राज्य के पतन का आरम्भ कहा।

मुझे लगता है कि डॉ. लिंडन सही थे। हम में से अधिकतर लोग ज़िम्मेदारियों को स्वीकार किए बिना अधिकारों को पाना चाहते हैं। परमेश्वर अपने परिवार के आत्मिक विकास के लिए हर पिता की अपना सही स्थान पाने में सहायता करें।

सारांश

परमेश्वर के लोगों के लिए आवश्यक गुणों की सूची हमने खत्म नहीं की है। किसी ने ''दस आदमी, जिनकी सबसे अधिक आवश्यकता है, की सूची दी है:''[8]

1. जो परमेश्वर के काम को किसी भी दूसरे काम से प्राथमिकता दे।
2. जो अपने बच्चों को घर में छोड़ने के बजाय आराधना में साथ लेकर जाए।
3. जो अपने हर मिलने वाले को अच्छा नमूना देना चाहता हो।
4. जो रविवार सुबह सोने के बजाय बाइबल क्लास के बारे में सोचता हो।
5. जो जेब में से जो निकला वह देने के बजाय अपनी आमदनी अनुसार चंदा दे।
6. जो अपने या किसी और के लिए नहीं, बल्कि मसीह के लिए आराधना में जाता हो।
7. जिसमें सहायता लेने के बजाय देने की धुन हो।
8. जो दूसरों की गलतियां निकालने से पहले अपनी ही कमियों पर नज़र मारे।
9. जो तेज़ दिमाग वाला होने के बजाय तैयार मन वाला हो।
10. जिसे सांसारिक सम्मान के बजाय मसीह के लिए आत्माओं को जीतने की अधिक चिन्ता हो।

मेरी चुनौती है कि ''हम *मर्द* बनें।'' अपने पुत्र सुलैमान को अन्तिम नसीहत देते हुए दाऊद ने कहा था, ''इसलिए तू हियाव बान्धकर *पुरुषार्थ दिखा*'' (1 राजा 2:2ख)। 1 कुरिन्थियों 16:13 में यह शिक्षा है: ''जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, *पुरुषार्थ करो,* बलवन्त होओ।''

परमेश्वर हम आदमियों की आदमियों की तरह काम करने अर्थात मसीही बनने में अगुआई करने में सहायता करे। आइए हम घरानों को प्रभु के निकट लाने में अगुआई करें। आइए हम भले और अच्छे काम में आगे रहें।

टिप्पणियां

[1]ऐसी ही एक आयत यिर्मयाह 5:1 में मिलती है।[2]वास्तव में इस गीत के बोल हैं"Take my *life* and let *it* be ..." फ्रांसेस एम. हेवरगल, ''टेक माई लाइफ़, एण्ड लैट इट बी।''[3]प्लैटो (अफलातून) एक प्राचीन यूनानी दार्शनिक था। [4]हरबर्ट बी. प्रोक्नोव एण्ड हरबर्ट बी. प्रोक्नोव, जूनि., *ए डिक्शनरी ऑफ़ विट, विज़डम, एण्ड सैटाइर* (न्यू यार्क: पापुलर लाइब्रेरी, 1962), 172 में दोहराया गया। [5]कई माता-पिता तर्क देकर कहते हैं, ''हां, मैं इन कारणों से दिन-रात काम नहीं कर रहा हूं। मैं तो इसलिए काम कर रहा हूं*ताकि मेरे बच्चों को वह तंगी*

देखनी पड़े, जो कभी मैंने देखी है।'' परिणाम तो इसका भी वही है: वे अपने बच्चों को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं।[6]मेरे उदाहरण उन ढंगों के बारे में हैं, जो मेरे इलाके के पुरुष कई बार अगुआई न कर पाने पर इस्तेमाल करते हैं। आपको ऐसे उदाहरणों का इस्तेमाल करना चाहिए, जो आपके इलाके से मेल खाते हों।[7]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* में आमतौर पर हम अमेरिकी उदाहरण देने से परहेज़ करते हैं। परन्तु मेरा मानना है कि पुरुषों की लीडरशिप की कमी केवल अमेरिका में ही नहीं है। किसी समाचार पत्र में दिए गए वक्तव्य संसार भर के अन्य देशों में भी लागू हो सकते हैं।[8]इस सूची में शीर्षक इस बात से लिया गया है कि कानून लागू करवाने वाली एजेंसियां कई बार ''दस अति वांछित'' अपराधियों की सूची जारी करती हैं। ''दस अति वांछित'' अपराधियों की यह आत्मिक सूची कई साल पहले ''अनाम'' लेखक द्वारा चर्च बुलेटिनों में छपा करती थी।[9]यदि आप संदेश के अन्त में लोगों को बपतिस्मा लेने या विश्वासी मसीही सेवा में फिर से लौट आने को कहते हैं तो पहले वहां उपस्थित सभी पुरुषों से कहें कि जहां भी प्रभु की बात मानने की आवश्यकता है, वे अवश्य मानें। फिर अपने निमन्त्रण में वहां उपस्थित सब लोगों को शामिल करें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आपको विज़ुअल-एड्स पसन्द हैं तो एक विचार है। इस भाग में दिखाए गए की तरह ''आवश्यकता है'' का एक पोस्टर बनाएं। ''मसीही लोग'' ''पिता'' और ''अगुवे'' शब्दों पर हल्के कागज़ की पट्टियां चिपकाएं। इसमें ''आप'' पर प्रश्न चिह्न वाले कागज़ की एक बड़ी सी शीट चिपकाएं।

पाठ प्रस्तुत करने पर, ''मसीही'' ''पिता'' और ''अगुवे'' शब्दों से एक-एक करके पट्टी उतार दें। अन्त में प्रश्न चिह्न वाला कागज़ उतार दें और ज़ोर दें कि ''हम चाहते हैं कि *आप* एक मसीही पिता और अगुवा'' बनें।

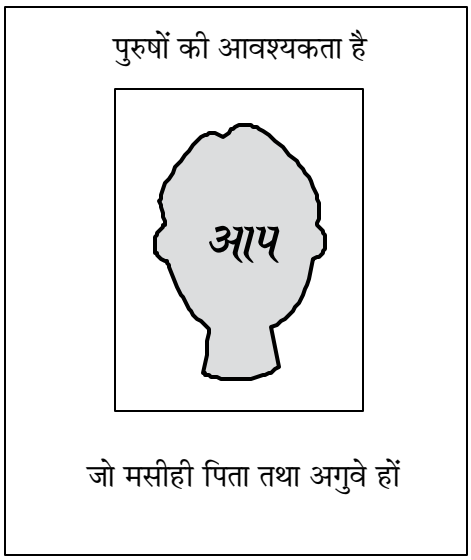

इस विचार का इस्तेमाल ओवरहेड प्रोजेक्टर के साथ भी किया जा सकता है।